चाँद की कलाएँ

कविता तिवारी

आकाश में चमकते सूरज, चाँद-तारों को सभी ने देखा होगा। इन सब में चाँद सबसे ज़्यादा मूडी है। सूरज और तारे तो लगभग नियत समय पर निश्चित आकार में नज़र आते हैं परन्तु चाँद कभी तो शाम होते ही आसमान में हाज़िरी दे देता है तो कभी देर रात तक अपनी एक झलक के लिए इन्तज़ार करवाता है। कभी घटता, कभी बढ़ता और कभी यूँ छिप जाता जैसे छुपन-छुपाई खेल रहा हो और कह रहा हो कि ढूँढकर बताओ तो जानूँ? और सबसे खास बात कि एक निश्चित समय के बाद चाँद अपने इस मूड को दोहराता भी है। आखिर चाँद इतने अलग मूड (रूपों) में क्यों नज़र आता है? कभी कटे नाखून-सा, कभी हँसिए-सा, कभी गोल और कभी गोल।

अमावस से पूनम से अमावस का सफर

चाँद पृथ्वी की परिक्रमा करता है। साथ ही अपने अक्ष पर भी घूमता है। अन्य ग्रहों, उपग्रहों की तरह चाँद का अपना प्रकाश नहीं होता है। वह तो बस सूर्य के प्रकाश को परावर्तित कर चमकता है। जब वह अपने अक्ष पर घूमता है तो उसके आधे भाग पर ही सूर्य का प्रकाश पड़ता है। दरअसल चाँद का आधा हिस्सा (जो सूर्य के सामने हो) हमेशा प्रकाशित होता है। परन्तु यह आधा प्रकाशित हिस्सा हमेशा पूरी तरह से पृथ्वी के सामने नहीं होता। पृथ्वी से हमें चाँद का केवल प्रकाशित हिस्सा ही नज़र आता है। जब चाँद पृथ्वी की परिक्रमा करता है तो प्रकाशित भाग का जितना हिस्सा पृथ्वी के सामने होता है, चाँद भी उसी रूप में नज़र आता है। जब पूरा प्रकाशित भाग पृथ्वी के सामने होता है तो पूर्णिमा होती है और जब पूरा अप्रकाशित भाग पृथ्वी के सामने हो तो अमावस्या। इन अलग-अलग रूपों को ही चाँद की कलाएँ कहते हैं।

यदि तुम चाँद पर जाकर देखोगे तो पृथ्वी भी तुम्हें अलग-अलग रूपों में चमकती हुई व चलती हुई दिखाई देगी ठीक वैसे ही जैसे हमारे आकाश में चाँद।

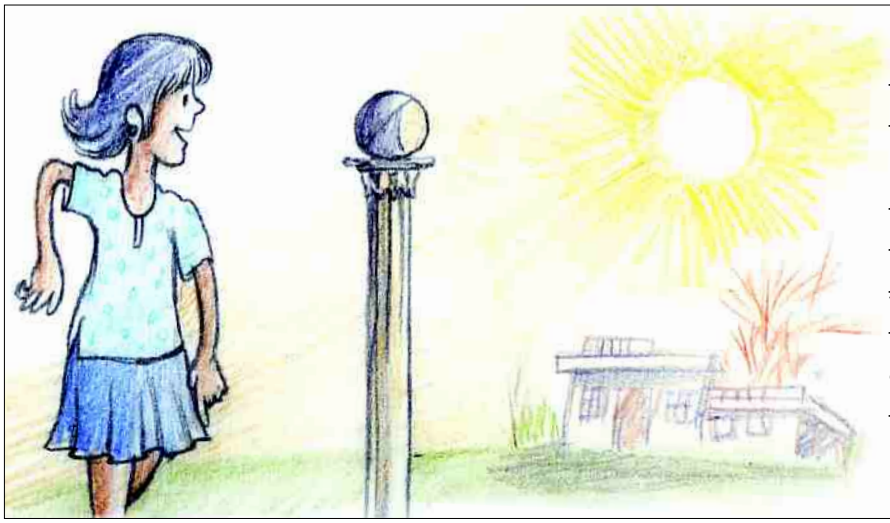

चाँद की इन कलाओं को तुम एक प्रयोग द्वारा आसानी से समझ सकते हो। इस प्रयोग को शाम के लगभग 4 बजे करना। एक गेंद को किसी सफेद कपड़े में कसकर लपेट लो। यह तुम्हारा चाँद है। गेंद को आँख की सीध में पकड़कर धूप में रखो और धीरे-धीरे घूमो। गेंद के उजले (जिस पर धूप पड़ रही है) भाग के अलग-अलग रूप दिखाई देंगे।

चाँद की ये कलाएँ एक पूरे चक्र में नज़र आती हैं। एक चक्र अमावस से शुरू होकर अगली अमावस तक चलता है और पूरे 29 $^{1}/_{2}$ दिनों का होता है। चाँद की इन कलाओं को अलग-अलग नाम से जाना जाता है। इनके उदय व अस्त होने का भी नियत समय होता है।

तुम्हारे पास कैलेण्डर तो होगा ही। उसके तारीख वाले खाने में हर दिन दिखाई देने वाले चाँद की तस्वीर बनाना। महीने बाद अपने कैलेण्डर में चाँद के घटने-बढ़ने को देखना। कब अमावस्या होगी, कब पूर्णिमा यह तुम अपना कैलेण्डर देख पहले से ही बता सकते हो।